E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.675

AKSHARA
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2024 Special Issue 10 Volume II (A)

हिंदी साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका नये संदर्भ

अतिथि संपादक
प्रो.डॉ.पी. एम. डोंगरे
प्राचार्य
लोकनेते डॉ.बालासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधि से सम्मानित)
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल
तह.राहुरी, जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

कार्यकारी संपादक
डॉ. गजानन चव्हाण
प्रधान सचिव
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो.डॉ. जिजाबराव पाटील
अध्यक्ष

डॉ. भाऊसाहेब नवले
अध्यक्ष, हिंदी विभाग

डॉ. अनंत केदारे
सह-आचार्य
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल

Chief Editor :
Dr. Girish S. Koli

Scanned by CamScanner

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2024 / Special Issue 10 / Vol. II (A)

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2024
Special Issue 10 Volume II (A)

हिंदी साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका नए संदर्भ

अतिथि संपादक

प्रो.डॉ.पी. एम. डोंगरे
प्राचार्य
लोकनेते डॉ.बालासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधि से सम्मानित)
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल
तह. राहुरी, जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

कार्यकारी संपादक

डॉ. गजानन चव्हाण — प्रधान सचिव
प्रो. डॉ. जिजाबराव पाटील — अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

डॉ. भाऊसाहेब नवले — अध्यक्ष, हिंदी विभाग
डॉ. अनंत केदारे — सह-आचार्य
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

Scanned by CamScanner

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
AMRJ
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / **January 2024** / Special Issue 10 / Vol. II (A)

Editorial Board

-: Chief & Executive Editor:-

Dr. Girish Shalik Koli
Dongar Kathora
Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301
Mobile No: 09421682612
Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

-:Co-Editors :-

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** *Associate Professor, Tashkent Institute of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan*
- **Dr.Vivek Mani Tripathi,** Assistant Professor, *Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China*
- **Dr.Maxim Demchenko** *Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute of International Relationships, Moscow,Russia*
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** *Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.*
- **Dr. Wajira Gunasena,** *Lecturer, Dept of Languages, Cultural studies & Performing Arts University of Sri Jayewardenepura, Nugegoda, Sri Lank*
- **Shiv Kumar Singh ,** *Lecturer, Indian Faculty of Arts and Humanities, University of Lisbon Portugal.*
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** *Assistant Professor* (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh Samadhan Guruchal,** *Assistant Professor* (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** *Assistant Professor* (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** *Assistant Professor* (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

PEER REVIEW POLICY

AMRJ will send a copy of research work to the editorial board. The board will verify the same according to the rules of research methodology. Then plagiarism in the work will be checked. In case if the research methodology is not followed properly by the researcher, message will be given to the researcher and he/she will be asked to revise the work in a stipulated period.
After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee.

SINGLE BLIND PEER REVIEW BY EXPERT PEER REVIEWERS

AMRJ adopts the Single Blind Peer Review Method. After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee for review through email. AMRJ do not disclose the details of researcher to Peer Review Committee. The Peer Review Table will be displayed online according to the criteria decided by the Editorial Board. After the approval by Peer Review Committee, the research work will be published in the Issue. In case if any instructions received from Peer Review Committee, the same will be forwarded to the researcher and he/she will be asked to clear the matter. Editorial Board of AMRJ will be the final authority to decide whether a research work is to be published or not.

AMRJ Disclaimer:

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.

Scanned by CamScanner

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2024 / Special Issue 10 / Vol. II (A)

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	हिंदी ग़ज़लों में सामाजिक भूमिका के नये संदर्भ	डॉ. मधु खराटे	05
2	हिंदी नाट्य साहित्य की सामाजिक भूमिका : नए सन्दर्भ (औरत की जंग नाटक के विशेष सन्दर्भ में)	प्रो.संजयकुमार शर्मा	12
3	हिंदी उपन्यासों मे चित्रित सामाजिक -आर्थिक समस्या	प्रो. डॉ.बाबासाहेब कोकाटे	16
4	हिंदी काव्य की सामाजिक एवं लोकतंत्रिक भूमिका : नये संदर्भ	डॉ. अनिल काळे	20
5	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी ग़ज़ल की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका : नये संदर्भ	प्रो.रजनी शिखरे / संतोष नागरे	24
6	रामावतार त्यागी और सुरेश भट की ग़ज़लों में अभिव्यक्त सामाजिक-राजनीतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन	प्रा.विजय लोहार डॉ.सुनील कुलकर्णी	27
7	हिंदी साहित्य की काव्य विधा में सामाजिकता : ज्ञानप्रकाश विवेक के विशेष संदर्भ में	डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे	33
8	हिन्दी कथा-साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका : नये संदर्भ	डॉ. दादासाहेब खांडेकर	37
9	समकालीन हिंदी नाटक की सामाजिक भूमिका	डॉ. ईश्वर पवार	40
10	कोंपलें काव्य संग्रह में लोकतान्त्रिक मूल्य	डॉ. मोहम्मद शाकिर शेख	42
11	21 वीं शती के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित समाज	प्रा.डॉ.शिवाजी उत्तम चवरे	44
12	'नयी सदी के स्वर': सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका के नये संदर्भ	डॉ. दीपक रामा तुपे	47
13	हिंदी कथा साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका :- नए संदर्भ	डॉ. रीतू भटनागर	51
14	धूमिल के काव्य में व्यक्त सामाजिक एवं जनवादी भूमिका : नये संदर्भ	डॉ.अनिता वेताळ /अंत्रे	54
15	लोकतांत्रिक व्यवस्था में किन्नरों के संवैधानिक अधिकारों का हनन ('पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' उपन्यास के संदर्भ में)	डॉ. भास्कर उमराव भवर	57
16	"सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में 'लोकतंत्र' की भूमिका"	कु.निलोफर खाजाहुसेन पल्ला डॉ.अनिल मारुति साळुंखे	60
17	हिंदी उपन्यासों में सामाजिकता और लोकतंत्रात्मक भूमिका	डॉ . अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	63
18	लोकतांत्रिक व्यवस्था में किन्नरों का स्थान ('तीसरी ताली' उपन्यास के संदर्भ में)	प्रा. संपतराव सदाशिव जाधव	67
19	हिन्दी कथा साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका	डॉ. हिमानी भाटिया	70
20	गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में राजनीति, धर्म और विद्रोह-वृत्ति का वर्णन	डॉ. जयशंकर रामजीत पाण्डेय	73
21	हिंदी साहित्य में लोकतंत्र	डॉ.ज्योतिबाबू जैन	79
22	सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित चेतना	प्रा.डॉ.हनुमंत दत्तु शेवाळे	83
23	हिंदी काव्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका : नये संदर्भ	डॉ. संगीता दिपक माळी	88
24	डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र के वैज्ञानिक साहित्य में सामाजिक सरोकार	डॉ. सपना तिवारी	91
25	दुष्यंतकुमार के ग़ज़ल साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका : नये संदर्भ में	डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला	94
26	'दौड' उपन्यास में चित्रित वृद्ध विमर्श	प्रा.दिलीप पंडीत पाटील	97
27	कोरोना परिप्रेक्ष्य में समाज की मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ एवं साहित्य की भूमिका	डॉ. प्रवीणकुमार नरसाप्पा चैगुले	99
28	हिंदी कथा साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका : नये संदर्भ	प्रो.डॉ.पाटील पी.एस.	104
29	'हिंदी साहित्य में लोकतंत्र की अभिव्यक्ति'	प्रो.डॉ.शेख शहेनाज अहेमद	109
30	हिंदी साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका	प्रा. डॉ. ऐनूर एस.शेख	114
31	धूमिल की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका	डॉ. अनंत केदारे	117

Scanned by CamScanner

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2024 / Special Issue 10 / Vol. II (A)

12

'नयी सदी के स्वर': सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका के नये संदर्भ

डॉ. दीपक रामा तुपे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (अधिकारप्रदत्त स्वायत्त)

सारांश:

हमारे समाज और लोकतंत्र को आतंकवाद, भ्रष्टाचार, लुटपाट, बेईमानी, शोषण, अवेहलना, महंगाई, भूखमरी, अनैतिकता, असुरक्षितता, निर्धनता, गरीबी के साथ-साथ जातिभेद, धर्मभेद, साम्प्रदायिक उन्माद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, वंशवद जैसी कुप्रवृत्तियाँ ध्वस्त कर रही है। हर राजनेता जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषा, क्षेत्र और रंग के आधार पर अपनी सत्ता हर हालत में बनाए रखने का प्रयास करते हैं जिसमें लोकतंत्र की हत्या हो रही है। सदियों से शोषित, अवहेलित गरीब मजदूर-किसानों को सुरक्षितता प्रदान करने के बजाय लोकतांत्रिक सूरज धृतराष्ट्र की तरह अंधा-गूँगा-बहरा हो चुका है। मजदूर-किसानों को हमारा लोकतंत्र बुनियादी सुविधाएँ नहीं दे पाता। यदि लोकतंत्र और समाजतंत्र को मजबूत करना है तो मजदूर, किसानों, गरीबों और महिलाओं को उनका अधिकार देना होगा और उन्हें सुरक्षितता प्रदान करनी होगी। आज लोकतंत्र एवं समाजतंत्र के रखवाले ही लोकतंत्र को धत्ता बता रहे हैं। परिणामस्वरूप देश में महिलाओं की इज्जत दिन-दहाडे लुटी जा रही है। इतना ही नहीं; यहाँ चीखना, चिल्लाना और आँसू बहाना सबकुछ व्यर्थ साबित हो रहा हैं। हमारे देश में न सच कहने की और न सच लिखने की आजादी है। आजादी पाकर पचहत्तर साल गुजर गए, मगर मजदूर-किसानों की झोपडी में बिजली नहीं है और न उन्हें दो वक्त की रोटी मिल पाती है। इन्हीं स्थितियों का प्रमाण हीरालाल मिश्र 'मधुकर' लिखित 'नयी सदी के स्वर' कविता संग्रह में मिलता है।

प्रस्तावना:

हीरालाल मिश्र 'मधुकर' लिखित 'नयी सदी के स्वर' कविता संग्रह की हर कविता बहुरंगी है। इस संग्रह की कविता में रंग-रूप की विविधता, सीधी-सीधी आक्रमकता तथा बेधकता आसानी से अभिव्यक्त होती है। समग्र देश के प्रतिनिधि कवि अपने युग के यथार्थ का बोध नयी सदी के स्वर में मुकरित करते हैं। प्रस्तुत कविता संग्रह की कविता में सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका के नये स्वर पूरे सिद्दत के साथ रेखांकित हुए हैं। अच्छे दिन का वादा करने वालों ने हमारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया है। महँगाई, भूखमरी, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, वंशवद, शोषण, अवेहलना, निर्धनता, गरीबी, जातिभेद, धर्मभेद, साम्प्रदायिक उन्माद, भाषावाद, क्षेत्रवाद जैसी लोकतांत्रिक एवं सामाजिक संवेदना से प्रस्तुत कविता परिपूर्ण क्षणों की वाणी बन गई है। प्रस्तुत कविता संग्रह की कविता समाजतंत्र और लोकतंत्र में आई हुई नई प्रवृत्तियों को नए संदर्भ के साथ रेखांकित करती है।

की-वर्ड: सामाजिक, लोकतांत्रिक संदर्भ, महँगाई, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, शोषण, निर्धनता, जातिभेद आदि।

आज समग्र दुनिया विश्वास और उम्मीदों पर चलती है; मगर वह विश्वास और उम्मीद ही छलवा साबित हुई तो हमारे जीने का मकसद ही खत्म हो जाता है। जिस उम्मीद एवं विश्वास के साथ हमने हमारे नेताओं को चुनकर दिया और लोकतंत्र के मंदिर में भेज दिया; मगर वह उम्मीद तार-तार हो गई और वह विश्वास भी छलवा साबित हो गया। इस संदर्भ में ऋतु सवान से पूछते हैं, पेड मौसम से पूछते हैं कि हम यूँ ही जिये जाएंगे अच्छे दिन कब आएँगे। इन्हीं स्थितियों का चित्रण कमला प्रसाद 'जख्मी' लिखित 'अच्छे दिन कब आयेंगे' कविता में मिलता है। स्वयं कवि कमला प्रसाद 'जख्मी' के शब्दों में -

''ऋतुओं ने सावन से पूछा, पेडों ने मौसम से पूछा,
हम यूँ ही जिये जायेगें, अच्छे दिन कब आयेंगे।
उम्मीदों के दीये जलाकर,
कुछ रखे थे देहरी पर।
चुन-चुन फूल चढाये हमने, लोकतंत्र के मंदिर पर।
छला गया विश्वास हमारा,
कब तक छलते जायेंगे।
कृषकों ने फसलों से पूछा, बछडों ने बैलों से पूछा,
हम यूँ ही जिये जायेंगे, अच्छे दिन कब आयेंगे।''।

Scanned by CamScanner

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2024 / Special Issue 10 / Vol. II (A)

स्पष्ट है कि सबको अच्छे दिनों का बेसब्री से इंतजार है। राजनेता जनता को अच्छे दिन लाने का वादा करते हैं, मगर निभाते बिल्कुल नहीं। इसलिए कृषकों ने फसलों से पूछा, बछडों ने बैलों से पूछा, हम यूँ ही जिये जायेगें, अच्छे दिन कब आयेंगे। शायर ने गजल से पूछा, कीचड ने 'कमल' से पूछा, हम यूँ ही जिये जायेगें, अच्छे दिन कब आयेंगे? आजादी के बाद जो सूरज हमारे देश में उदियमान हुआ उन्होंने सरकारी धूप-छाँव भी टुकडों-टुकडों में बांट लिया अर्थात् सरकारी संपत्ति मिलबांटकर हडप ली। इतना ही नहीं; कुलगुरु भी रागदरबारी का गीत गा रहे हैं। मगर इस महँगाई-भूखमरी में निर्धन जनता ही झुलस रही है। कमलाप्रसाद 'जख्मी' लिखित 'अच्छे दिन कब आयेंगे' कविता में इसी स्थिति का प्रमाण मिलता है। कवि निर्धन जनता की हालत बयां करते हुए सत्ताधारियों पर निशाना करता है- ''सूरज ने बाँटा टुकडों में, / धूप छाँव सरकारी। / कुल गुरु भी गा रहे अब /शुद्ध राग-दरबारी। / महंगाई-भूख की अग्नि में / निर्धन ही झुलसे जायेंगे। / शायर ने गजल से पूछा, कीचड ने 'कमल' से पूछा, / हम यूँ ही जिये जायेगें, अच्छे दिन कब आयेंगे।''[2]

स्पष्ट है कि आज सरकारी संपत्ति सत्ताधारियों द्वारा हडपने से लोकतंत्र ध्वस्त हो गया है, जिसके कारण निर्धन ही महँगाई-भूखमरी से झुलस रहा है। हमारे देश को आजादी तो मिली, मगर कुछ दूरी तक आगे बढ पाने के बाद एक ओर आतंकवाद ने तो दूसरी ओर भ्रष्टाचार ने अपनी जडे जमाई हैं। ''आज पूरी दुनिया आतंकवादी गतिविधियों से त्रस्त है और एक सामान्य व्यक्ति से लेकर अमेरिका जैसे महाबली राष्ट्र इससे भयभीत और अव्यवस्थित हो रहे हैं।''[3] स्पष्ट है कि आतंकवाद के कारण पूरी दुनिया भयभीत हो चुकी है। आतंकवाद और भ्रष्टाचार के कारण हमारा प्रजातंत्र अर्थतंत्र बन गया है। हमारे प्रजातंत्र को वंशवद का दंश हो चुका है; जिसके कारण सवाल यह उठता है कि इस दंश से भारत देश कैसे बच पाएगा? इसी स्थिति का चित्रण रामसनेही राथ लिखित 'देश की दशा' कविता में मिलता है। कवि आजादी के बाद की वर्तमान स्थिति का धधकता वास्तव इन शब्दों में बयां करता है - ''आजादी के बाद देश ने, / आगे कदम बढाया। / कुछ दूरी तक बढे किंतु, / कुछ ने बाधा पहुँचाया। / एक तरफ आतंकवाद ने, / अपने पैर जमाये / दूजे भ्रष्टाचार ने आकर, / अपने जाल बिछाये। / प्रजातंत्र का अर्थतंत्र, / अब कैसे बच पायेगा, / वंशवद का दंश झेल, / क्या भारत बढ पायेगा?''[4]

कहना आवश्यक नहीं कि आज हमारे देश में आतंकवाद और भ्रष्टाचार ने ऐसे जाल बिछाए हैं कि प्रजातंत्र का अर्थतंत्र बन गया है; जिससे देश को बचाना चिंता का ही नहीं बल्कि चिंतन का विषय बन गया है। ''आजादी की आधी से ज्यादा सदी बीत जाने के बाद भी हम अपनी आधी से ज्यादा जनसंख्या को जीवन की मूलभूत सुविधाएँ भी देने में नाकाम रहे हैं। आज हाशिये पर आम जनता और सुदूर भारत का भूखा नंगा आदमी इस लोकतंत्र से क्या उम्मीद रखे हुए है। उसे तो हर पाँच वर्ष बाद आने वाले चुनाव, नारे और मंदिर मस्जिद से रोटी की जुगाड और जीने के बहाने का इंतजार रहता है। ...अकाल की विभीषिका और पानी की तलाश में किस लोकतांत्रिक भारत का चेहरा दिखाई देता है जो चेहरा हमें आज दिखाया जा रहा है वह तो असली नहीं।''[5] स्पष्ट है कि हमारे देश को आजादी मिलकर पचहत्तर साल गुजर गए, मगर आज भी मजदूर-किसानों को बुनियादी सुविधाएँ नहीं मिल रही है। लोकतंत्र का सूरज सात दशक पहले ही निकला, मगर अपने मजदूर-किसानों की किस्मत ही खोटी है जो दो वक्त की रोटी भी नहीं दे पाती। सदियों से शोषित, अवहेलित गरीब मजदूर-किसानों को लोकतंत्र के सूरज ने रीते के रीते ही रख दिया है। इसी स्थिति का प्रमाण शिवपूजन लाल विद्यार्थी लिखित 'हम ग़रीब मजदूर किसान' कविता में मिलता है। कवि मजदूर-किसानों की सच्ची दासतां इन शब्दों में बयां करता है- ''अपनी किस्मत खोटी, दो रोटी के हम मेहमान। /लोकतंत्र के सूरज निकले / सात दशक से ज्यादा बीते / मगर रौशनी के घट प्यासे / अब भी है रीते के रीते / जाने अंधी झोपडियों में कब आयेगा स्वर्ण बिहाना। / सदियों से शोषित अवहेलित हम गरीब मजदूर किसान।''[6]

स्पष्ट है कि हमें आजादी मिली, लोकतंत्र मिला, मगर इस लोकतंत्र में मजदूर-किसानों को बुनियादी सुविधाएँ नहीं मिली। सत्ता के कौए बडे चालबाज होते है और सत्ता के लालची भी। इतना ही नहीं; वे एक-दूसरे को नोंच-नोंचकर खाते हैं। उन्हें ना कोई धर्म, ना कोई कर्म की फिक्र है बल्कि वे केवल सत्ता के ही लालची है। कोई अपने आपको बेच रहा है तो कोई बिक रहा है। कोई भूले-बिसरे मुद्दे खोद रहा है तो कोई गाड रहा है। जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, क्षेत्र के रंग से रंगे सत्ता के सफेदपोश कौए लोकतंत्र को भी मारकर खा रहे है। डॉ. कृष्ण कांत दुबे लिखित 'सत्ता के कौए' कविता में इन्हीं स्थितियों का दस्तावेज मिलता है। स्वयं कवि के शब्दों में - ''जाति/धर्म/सम्प्रदाय / भाषा/क्षेत्र/रंग से रंगे / खूब हैं सफेद पोश वाले कौए, / लोकतंत्र को मार खा रहे / जन-भावनाओं का माँस /बडे भूखे हैं / सत्ता के नर-भक्षी कौए।''[7]

उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि सत्ता के ये नर-भक्षी कौए जन भावनाओं का माँस ~~नोंच-नोंच~~ कर खा रहे हैं। कुर्सी के लालची कौए किसी को बेच रहे हैं, किसी को गाड रहे है या खुद ही बिक रहे हैं और खोद रहे हैं-भूले-बिसरे चित्र। कहना

Scanned by CamScanner

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2024 / Special Issue 10 / Vol. II (A)

आवश्यक नहीं कि सत्ता के कौए जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषा, क्षेत्र और रंग में रंगकर हर हालत में कुर्सी यानी अपनी सत्ता को बनाए रखते हैं। हमारे देश के लोकतांत्रिक युग में दिन-दहाडे नारी की अस्मत लुटी जा रही है। जो लोकतंत्र महिलाओं को सम्मान नहीं देता वहाँ चीखना, चिल्लाना और आँसू बहाना व्यर्थ हैं। रामेश्वरनाथ मिश्र की 'अनुरोध' कविता में इसी स्थिति का चित्रण मिलता है। कवि आँसू बहाने वाले दोस्तों को लोकतांत्रिक जमाने की वास्तविक स्थिति बयां करता है -

''व्यर्थ है आँसू बहाना दोस्तों!
चीखकर जग को जगाना दोस्तों!
दिन-दहाडे लुट रही अस्मत यहाँ,
लोकतांत्रिक है जमाना दोस्तो!''[8]

स्पष्ट है कि आज का लोकतंत्र किसी की भी हिफाजत नहीं कर रहा है। आज के लोकतंत्र की हालत इतनी खस्ता हो चुकी है कि यहाँ चीखना, चिल्लाना और आँसू बहाना व्यर्थ हो गया है। इतना ही नहीं; आज का लोकतंत्र महिलाओं को सुरक्षित नहीं कर पाता। वर्तमान लोकतंत्र में आजादी के मायने बदल चुके हैं। यहाँ खाकी और खादी दोनों की साँठगाँठ से मानो लुटने की आजादी मिली हुई है। लूट-खसोट ही उनका लक्ष्य है। यहाँ के न्यायालय ही यातनालय बन चुके है। सवाल यह उठता है कि यह कैसी आजादी है यहाँ शरीफों के घरों को फसादी लूट रहा है। इसी स्थिति का चित्रण सूर्य नारायन गुप्त 'सूर्य' लिखित 'हाइकु' में मिलता है। कवि देश की आजादी का वास्तव रेखांकन इन शब्दों में अभिव्यक्त करता है -

''खाकी व खादी/लूटने की जिनको/मिली आजादी।
स्वर्ण-मेडल/पाकर खिल गया/मन-कमल।
पक्ष-विपक्ष/लूट-खसोट ही है/उनका लक्ष्य।
ये न्यायालय/सच के लिये तो है/यातनालय।
कैसी आजादी/शरीफों के घरों को/लूटें फसादी।''[9]

स्पष्ट है कि आज की आजादी में फसादी, खाकी और खादी खुलेआम लूट रहे हैं मानो आजादी खादी, खाकी और फसादी को ही मिली हुई है। स्वाधीनता के पहले हमने रामराज्य का सपना देखा था, लेकिन यहाँ हर किसी को देश-देश के खेल का बुखार चढा हुआ है। इस खेल में हाथ किसी ने, पाँव किसी ने काट दिए हैं और अपने-अपने हिस्से का देश सबने बाँट लिया है। ''हमारे देश में जहाँ राजा, प्रजा का पालक और प्रजा, राजा की संतान मानी जाती थी, वर्तमान युग में कुर्सी धारी ही प्रजा के शोषक बने हैं।''[10] आज सत्ता या कुर्सी का दूसरा नाम शोषण हो गया है। अपने-अपने इस देश में सहमी-सहमी आजादी है। जय चक्रवर्ती की 'रामराज्य आ गया देश में' कविता इन्हीं स्थितियों का प्रमाण मिलता है। देश की आजादी का वास्तविक चित्रण कवि इन शब्दों में व्यक्त करता है- ''सच कहने की-सच लिखने की / सहमी-सहमी है आजादी, / अपने-अपने देश सभी के, / सबने- / हिस्से बाँट लिए हैं / खेल-खेल में हाथ किसी ने / पाँव किसी ने / काट दिये हैं / 'आओ देश-देश खेलें' का / सबको चढा बुखार मियादी।''[11]

स्पष्ट है कि हमारे देश में सच लिखने और सच कहने की आजादी नहीं है। खेल-खेल में सभी ने देश को ही बांट लिया हैं। आज हमारी सरकार गूँगी और बहरी हो गई है और सब राजा धृतराष्ट्र और दुशासन हो गए है। यहाँ दुशासन ही हर द्रोपदी का चीरहरण कर रहा है। ऐसे में कृष्ण न जाने कहाँ खो गया है। आम जन एक बार उल्लू बन सकता है बार-बार नहीं क्योंकि वह अपनी खुद्दारी बिल्कुल झुकाने को तैयार नहीं है। सिंहासन को नमन करना भी उसे स्वीकार नहीं है। इसी स्थिति का प्रमाण संजीव कुमार गुप्ता 'तनहा' की 'गीतों को अधिकार नहीं हैं' कविता में मिलता है। स्वयं कवि के शब्दों में -

''अपनी... खुद्दारी बिल्कुल... झुकने को तैयार नहीं है।
सिंहासन को नमन करूँ मैं, यह मुझको स्वीकार नहीं है।
गूँगी... बहरी... सरकारों के
राजा... सब... धृतराष्ट्र हो गए।
चीरहरण... कर रहा... दुशासन
कृष्ण न जाने... कहाँ खो गए।
काठ की हाँडी... सुन लो भइया... चढती बारम्बार नहीं है।
सिंहासन को नमन करूँ मैं, यह मुझको स्वीकार नहीं है।''[12]

Scanned by CamScanner

स्पष्ट है कि आज हमारी सरकार दुशासन की तरह अंधी-गूँगी-बहरी हो गई है, लेकिन खुद्दार आदमी हर हाल में झुकने को तैयार नहीं है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हीरालाल मिश्र 'मधुकर' लिखित 'नयी सदी के स्वर' कविता संग्रह की कविताएँ महंगाई, भूखमरी, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, लुटपाट, बेईमानी, वंशवद, शोषण, अवेहलना, अनैतिकता, असुरक्षितता, निर्धनता, गरीबी, जातिभेद, धर्मभेद, साम्प्रदायिक उन्माद, भाषावाद, क्षेत्रवाद आदि लोकतांत्रिक एवं सामाजिक भूमिका का वे नए स्वर हैं जो नए संदर्भों को व्याख्यायित करते हैं। इतना ही नहीं; जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषा, क्षेत्र और रंग में रंगकर हर हालत में कुर्सी को बनाए रखने का जी-जान से प्रयास करते हैं। हमारे देश के लोकतांत्रिक युग में दिन-दहाडे महिलाओं की अस्मत लुटी जा रही है। यहाँ चीखना, चिल्लाना और आँसू बहाना सबकुछ व्यर्थ हैं। देश को आजादी मिलकर पचहत्तर साल गुजर गए, हमारे यहाँ न सच कहने की और न सच लिखने की पूरी आजादी है, न मजदूर-किसानों की झोपडी से अंधेरा दूर हो चुका है और न मजदूर-किसानों को दो वक्त की रोटी मिल रही है। सदियों से शोषित, अवहेलित गरीब मजदूर-किसानों को सुरक्षा देने के बजाय लोकतांत्रिक सूरज दुशासन की तरह अंधा-गूँगा-बहरा हो चुका है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. हीरालाल मिश्र 'मधुकर' - नयी सदी के स्वर, नारायण प्रकाशन, 121, विद्या विहार कालोनी, परिवार ब्रेड फैक्टरी के सामने, मडौली भुल्लनपुर, वाराणसी -221 108, प्रथम संस्करणः 2018, पृष्ठ - 431
2. वही, पृष्ठ - 432
3. मान चंद खंडेला- अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर-राजस्थान, प्रथम संस्करणः 2002, पृष्ठ - प्रस्तावना से उद्धृत।
4. हीरालाल मिश्र 'मधुकर' - नयी सदी के स्वर, नारायण प्रकाशन, 121, विद्या विहार कालोनी, परिवार ब्रेड फैक्टरी के सामने, मडौली भुल्लनपुर, वाराणसी -221 108, प्रथम संस्करणः 2018, पृष्ठ – 318
5. डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू - धर्मनिरपेक्ष भारतीय लोकतंत्र, बुक एनक्लेव, जैन भवन, एन. ई. आई. के सामने, शांतिनगर-जयपुर, प्रथम संस्करणः 2003, पृ.-1
6. हीरालाल मिश्र 'मधुकर' - नयी सदी के स्वर, नारायण प्रकाशन, 121, विद्या विहार कालोनी, परिवार ब्रेड फैक्टरी के सामने, मडौली भुल्लनपुर, वाराणसी -221 108, प्रथम संस्करणः 2018, पृष्ठ – 42
7. वही, पृष्ठ - 564
8. वही, पृष्ठ - 306
9. वही, पृष्ठ - 300
10. डॉ. माधवी जाधव - मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित समस्याएँ, विद्या प्रकाशन, सी-449, गुजैनी, कानपुर-22, प्रथम संस्करणः 2007, पृष्ठ - 253
11. हीरालाल मिश्र 'मधुकर' - नयी सदी के स्वर, नारायण प्रकाशन, 121, विद्या विहार कालोनी, परिवार ब्रेड फैक्टरी के सामने, मडौली भुल्लनपुर, वाराणसी -221 108, प्रथम संस्करणः 2018, पृष्ठ - 428
12. वही, पृष्ठ - 514

Scanned by CamScanner